जोगड़ी बनी ज्योति

मुकेश बहुगुणा
रानीचौरी, टिहरी गढ़वाल,
उत्तराखंड

हर प्रातः पशुओं को जंगल ले जाती हुई लड़की, पगडंडी की सीमा से लगे स्कूल को गौर से देखती और मन ही मन सोचती काश मुझे भी पढ़ने का मौका मिला होता.... तो मैं भी अन्य बच्चों की तरह स्कूल जाती, किताबें पढ़ती, खेलती पर क्या करूं घर के कार्यों का बोझ, मां की कमी व पिता की बेबसी ने मुझसे मेरा बचपन छीन लिया है। अपनी सोच में डूबी हुई लड़की जंगल की ओर बढ़ती जाती, सोचती काश मेरा भी एडमिशन स्कूल में हो जाता।

नित्य ही स्कूल की सीमा से चलते कुछ देर ठहरती और तन्मयता के साथ देखती, किस प्रकार बच्चे पढ़ रहे हैं, खेल रहे हैं, और आनंदित हैं।

स्कूल में सामूहिक प्रार्थना, और व्यायाम करते हुए बच्चों को देखना, गुरु जी का मार्गदर्शन, कहानी व कविता का हाव–भाव के साथ वाचन उसे बहुत अच्छा लगता।

स्कूल की सीमा से जंगल जाते हुए वे दस पंद्रह मिनट उसे अपने जीवन के अनमोल क्षण लगते।

स्कूल की सीमा से लगी पगडंडी में खड़ी लड़की से एक दिन गुरु जी ने पूछा... क्या तुम स्कूल में पढ़ती हो ? लड़की सकुचाते हुए बोली 'जी नहीं'।

क्यों नहीं पढ़ती हो तुम ?

वह कुछ ना बोल सकी.. और बिना कुछ बोले जंगल की राह में अपनी गायों के पीछे दौड़ पड़ी।

गुरु जी ने गांव के अन्य बच्चों से जब उसके बारे में पूछा तो पता लगा कि लड़की की मां का देहांत बचपन में ही हो गया था इसलिए उसे घर के सभी कार्य करने होते थे। साथ ही जंगल से चारा, लकड़ी लाना व पशुओं की देखभाल भी करनी होती थी।

गुरु जी उसके बारे में जानकर पूरी बात समझ गए। अगले दिन गुरु जी ने फिर से उससे कहा कि तुम स्कूल में पढ़ोगी ? जैसे वह इसी प्रश्न का इंतजार कर रही थी, बोली मेरे पिताजी मुझे स्कूल नहीं भेज रहे हैं... कह रहे हैं कि घर में बहुत काम है।

गुरु जी ने कहा अगर तुम पढ़ना चाहती हो तो मैं तुम्हारे घर वालों से बात कर लूंगा। लड़की सहमति में सिर हिलाते हुए जंगल की ओर अपने पशुओं को हांकती हुई चली गई।

गुरु जी उसी दिन हाफ टाइम में एक दो बच्चों के साथ लड़की के घर चले गये जो कि स्कूल से बमुश्किल 200 मीटर दूर रहा होगा। घर में गुरु जी को आता देख उसके पिताजी ने गुरु जी का सम्मान किया, बैठाया, चाय पानी की व्यवस्था करने लगे..... संभवतः उनको गुरु जी के आने का कारण पता लग गया था, क्योंकि लड़की स्कूल में भर्ती होने की घर में जिद कर चुकी थी।

गुरु जी ने लड़की के पिता से जब लड़की को स्कूल भर्ती करने को कहा तो लड़की के पिता ने पूरी तरह असमर्थता जताई, साथ ही कहा कि उनके पास कोई फीस भी नहीं है, और ना ही वे इतने समर्थ हैं कि लड़की की किताब कॉपी खरीद सकें।

गुरु जी ने कहा आप फीस व किताबों की चिंता न करें। स्कूल में कोई फीस नहीं लगेगी और ना ही आपको किताब कॉपी लानी है ....इसकी व्यवस्था मैं स्वयं अपने स्तर से कर लूंगा। लड़की के पिता जी हाथ जोड़कर बोले, गुरु जी अगर लड़की स्कूल चली गई तो हमारे घर के दैनिक कार्य कौन करेगा ?

गुरु जी ने बोला चिंता मत करो उसे प्रतिदिन हाफ टाइम बाद छुट्टी देंगे... ताकि वह स्कूल के साथ–साथ घर के कार्य भी कर ले।

गुरु जी के इस प्रकार समझाने पर लड़की के पिता मान गए और लड़की के लिए स्कूल में प्रवेश पाने का रास्ता बन गया।

अगले दिन जैसी आशा थी वही हुआ.... लड़की सुबह–सुबह बड़ी प्रसन्न मन से अन्य बच्चों के साथ स्कूल के प्रांगण में खड़ी थी... सभी बच्चे उसके आसपास ही थे। आज स्कूल में पहला दिन था, स्कूल में एडमिशन होना था। उसके पिताजी नहीं आए थे..... पर वह निश्चिंत थी कि गुरू जी ने उसे कहा था कि तुम्हारा स्कूल में एडमिशन हो जाएगा।

गुरु जी अपने निश्चित समय पर स्कूल पहुंचे, देखा आज स्कूल में एक अलग सा माहौल था। वह लड़की जिसकी उम्र लगभग चौदह साल की थी, उन छोटे–छोटे नन्हे मुन्ने बच्चों के साथ स्कूल में एडमिशन हेतु खड़ी थी। प्रार्थना की पंक्ति में वह भी अन्य बच्चों के साथ खड़ी हो गई। गुरु जी ने भी उसका हौसला बढ़ाया।

प्रार्थना स्थल के बाद सब बच्चे कक्षा में बैठे तो गुरु जी ने बच्चों की सबसे पहले उपस्थिति ली। लड़की का नाम उपस्थिति हेतु नहीं पुकारा गया तो अन्य बच्चे बोले, गुरु जी इसका नाम तो आपने लिया ही नहीं। गुरु जी ने कहा, आज इसका नाम लिखा जाएगा फिर प्रतिदिन इसको भी उपस्थिति बोलनी होगी।

गुरु जी ने लड़की को अपने पास बुलाया और पूछा कि तुम्हारे पिताजी नहीं आए हैं क्या ?

लड़की ने गर्दन हिलाते हुए ''ना'' कहा।

गुरु जी ने एडमिशन फॉर्म निकालते हुए उससे कहा कि आज हम तुम्हारा एडमिशन करते हैं, तुम्हारा नाम क्या है लड़की बोली ''जोगड़ी''।

अरे घर का नाम नहीं जो तुम्हारा असली नाम है वह बताओ ?

''जी गुरु जी मेरा नाम तो जोगड़ी ही है।''

क्या तुम्हारा और कोई नाम नहीं ?

''जी नहीं'' ... लड़की ने पूरी गम्भीरता से कहा।

अन्य बच्चों से पूछा तो उन्होंने भी एक स्वर में कहा... नहीं गुरु जी इसका नाम जोगड़ी ही है।

गुरु जी ने कहा जोगड़ी नाम ठीक नहीं लग रहा है...तुम अपना स्कूल का नया नाम रख लो। लड़की की कुछ समझ में नहीं आया.... बोली गुरु जी आप ही मेरा नाम रख दो। अन्य बच्चों ने भी एक साथ कहा गुरु जी आप ही नया नाम रखो।

गुरु जी ने कुछ क्षण सोचने के बाद कहा ....ज्योति नाम कैसा रहेगा ?

सभी बच्चों ने खुश होकर ताली बजाकर अपनी सहमति दी, तो वहीं लड़की को भी नया नाम बहुत पसन्द आया ... जिसकी खुशी उसके चेहरे पर साफ झलक रही थी। आज वह जोगड़ी से ज्योति बन चुकी थी।

ज्योति का स्कूल में पहला दिन ही उसे एक नयी पहचान दिला गया ... सभी बच्चे उसे अब ज्योति कहते। वह पूरे उत्साह से नित्य विद्यालय आने लगी... पढ़ने में उसका मन रमने लगा। हाफटाइम में भी उसके घर जाने की इच्छा ना होती थी। उसकी देखा–देखी अन्य बच्चे जो स्कूल नहीं जाते थे, वे भी स्कूल में प्रवेश लेने लगे थे।

ज्योति अब पूरा दिन स्कूल में गुजारने लगी। जिसका परिणाम यह हुआ कि वह दो साल में ही कक्षा चार में पहुंच

गयी। गुरु जी ने भी उसे हर छह माह में अगली कक्षा में प्रवेश दिलाया। ज्योति अब पूरे स्कूल की नायक थी।

आज वह जब नित्य की तरह स्कूल में थी ... तभी उसे अन्य बच्चों से पता लगा कि गुरु जी का स्थानान्तरण अन्य स्कूल में हो गया है तो उसे सहज ही विश्वास न हुआ... वह अपने सपनों को जिस गुरु के मार्गदर्शन में पाने की चाह रख रही थी ... वे तो सच में स्थानांतरित हो गये थे।

ज्योति के आंखों से अश्रु धारा बह रही थी ... अन्य बच्चों की आंखें भी नम थी। जिन गुरु के मार्गदर्शन में वे अभ्यस्त हो गये थे ..... वे आज जा रहे हैं। गुरु जी ने सभी को समझाया कि यह एक प्रक्रिया है .... "मेरी जगह अन्य गुरु जी आए हैं वे आपको बहुत कुछ नया सिखाएंगे। ज्योति तुम व सभी बच्चे निरंतर पढ़ते रहना .. व ज्ञान की इस ज्योति को बुझने मत देना।" गुरु जी भी भावुक हो गये थे ... बच्चों के चेहरे पर उदासी के भाव व आंखों में आंसू ही उनकी महत्ता को बता रहे थे। ज्योति ने गुरु जी के पांव छूते हुए कहा "गुरुजी आपने मुझे नये नाम के साथ ज्ञान का प्रकाश दिया है मैं जोगड़ी से ज्योति बन गयी हूं.. मैं सदा इसी पथ पर अग्रसर रहूंगी।"

सभी बच्चों ने फिर भारी मन से गुरु जी को विदा किया। ज्योति सहित सभी बच्चे अश्रुपूर्ण नयनों से गुरुजी के ओझल होने तक हाथ हिलाते हुए गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा व स्नेह प्रदर्शित करते रहे।